

## CHAPTER-VI

### MEMBERS BLOSSOM

*(DISCLAIMER: AIACE neither takes responsibility of Originality and veracity of contributions nor subscribe to the theme and views of the contributors)*



**R. A. Manjunatha Prasad**

**Retd. Finance Manager, WCL**

**M-535**

### सुभाषितानि

पापान् निवारयति योजयते हिताय गुह्यानि गूहति गुणान् प्रकटीकरोति |

आपद्रुतम् च न जहाति ददाति काले सन्मित्रलक्षणमिदम् प्रवदन्ति सन्तः ||

They will help you overcome bad qualities and inspire you to take the right path; they will keep your secrets but advertise your good qualities; they will not desert you when you're in trouble and give of themselves in your time of need – such is the nature of good friends say the wise.

छायामन्यस्य कुर्वन्ति स्वयं तिष्ठन्ति चातपे |

फलान्यपि परार्थाय वृक्षाः सत्पुरुषा इव ||

The trees make shade for others, themselves standing in Sun. (Their) fruits are also for others. (Hence) the trees are like a 'satpurusha' (noble person).

अन्तस्तिमिरनाशाय शब्दबोधो निरर्थकः ।  
न नश्यति तमो नाम कृतया दीपवार्तया ॥

ऋग्वेद

Mere oral advice is not effective in removing darkness (ignorance or loss of hope) of mind. Actual action is necessary. Just saying the word "lamp" cannot remove darkness.

आरोप्यते शिला शैले यथा यत्नेन भूयसा ।  
निपात्यते सुखेनाधस्तथात्मा गुणदोषयोः॥

Hauling a rock to the top of the hill is incredibly difficult. But pushing it down is very easy. Similarly, one rises with good qualities but falls quickly due to a single misdeed. AIACE is built on the hard work of its members. We appeal to all our members to maintain the good quality.

विद्या मित्रं प्रवासेषु भार्या मित्रं गृहेषु च ।  
व्याधितस्यौषधं मित्रं धर्मां मित्रं मृतस्य च ॥

Knowledge is (your) friend in the journey, wife is the friend at home, medicine is friend in illness and dharma is the friend after death.

अस्थिरं जीवितं लोके अस्थिरे धनयौवने ।  
अस्थिराः पुत्रदाराश्च धर्मकीर्तिद्वयं स्थिरम् ॥

In this world, the life is uncertain, wealth and youthfulness also do not last long (they are unstable). Even son and wife are unstable. Dharma and fame are the two things that last long (are stable). Perform your Dharma and gain kirti to be remembered for long.



नमिता सेनगुप्ता  
पत्नी, स्व. के आर सेनगुप्ता  
सदस्य संख्या-A-20109

## नवागत वर्ष

पुरातन वर्ष जाने के लिए हुआ उन्मुख  
लिखेगा स्मृतियाँ काल वलय पृष्ठों में  
अपना आवासीय नाम पट हटाकर  
लिया अवसान शीत के निस्तब्ध रात्रि में

नवागत वर्ष के आगम का पदचाप  
नवप्रभात के द्वार पर देकर थाप  
जगा रहा सुप्त पड़ी प्रत्याशाओं को  
लेकर उच्छ्वास हरेगा उत्ताप

नव दिवस नव उमंग नव अनुराग  
अभिनंदन में पुष्प उड़ाये पराग  
प्रभाती करे नवोदित का आव्हान  
मलय समीर ने छोड़ा भैरवी राग

नववधु के साज में ऊषा का पदार्पण  
क्षितिज में गूँज उठा मंगला चरण  
पर्ण पात करे शिशिर बिंदु से आचमन  
प्रादुर्भूत होगा विश्व में नव जागरण

जो बेपथ हुए निशीथ कालिमा में  
आगत होंगे नव विहान के उजास में  
चुनौतियों का लेकर नवीन संकल्प  
उड़ान भरेंगे जीवन के आकाश में

छटे बैर वैमनस्यता का कुहासा  
मुखरित हो उर में प्रेम की भाषा  
शांति अमिय रस छलके भुवन  
नवल...

## जीवन सांझ

जीवन के ताने बाने बुनते बुनते  
दबे पांव आई जीवन की सांझ  
आशायें कभी नहीं होगी उद्भव  
मनमयूरी अब हो गई बांझ

उमंगों के कपाटों को कर बंद  
चला गया तोड़ कर सारे बंध  
जीवन सांझ में रह गई अकेली  
बढ़ रही उदासियों के तट बंध

कितना सुखद था जीवन का भोर  
संदल सा महकता चारों ओर  
उत्साह लिए बहता जीवन समीर  
मृगतृष्णा में भटका मन चकोर

जीवन वीणा के तार हुए विछिन्न  
नहीं छेड़ेगी पुनः राग नूतन  
जीवन रंगमंच में किये कई अभिनय  
अंतिम प्रस्तुति में हुए उन्मन

जीवन सांझ को कर दो ज्योतिर्मय  
शेष पथ है घोर अंधकारमय  
सपनों के बीज रखी थी पोटली में  
बो कर कर जाऊँ आगामी सुखमय

## आस्था

आस्था के स्तंभ पर खड़ा संसार  
अदृश्य शक्तियाँ गभीर पारावार  
सकारात्मक उर्जा होकर प्रस्फुटित  
अंतरात्मा से हो जाती एकाकार

हृदय मरुभूमि में लाती हरितिमा  
उपास्य हो जाते प्रस्तर प्रतिमा  
जीवन क्षितिज पर प्रकीर्ण लालिमा

आस्था में है भावनाएँ निहित  
मौन उपासनाएँ हो जाती शब्दित  
वृहद समस्याएँ कर देती सूक्ष्म  
नही आभास हो पाता किंचित

आस्था में पूर्वजों ने रोंपे थे पौध  
होकर सघन गाछ हुए फलीभूत  
जीवन रक्षक सूत्र बांध बांध कर  
श्रद्धा से जीवन शाख घनीभूत

जीवन पथ हो जाये दुश्वार  
झंझावातों के उठे प्रबल ज्वार  
दुर्गम पथ अवश्य होगा निर्बाध  
संबल बन आस्था थामेगी पतवार

निस्सीम मन रखो विश्वास  
उसी के हाथों में उच्छ्वास प्रश्वास  
निराशा के तम में प्रकीर्ण उजास